

## अर्नाला में डोल जालों में एक एवजी संपदा के रूप में तारली मात्स्यकी का उद्गम

अर्नाला महाराष्ट्र के ताने जिले स्थित प्रमुख डोल जाल अवतरण केंद्रों में एक है और यहाँ तीन बहुउद्देशी सहकारी संघ भी कार्यरत है। अर्नाला मछुआ संघ को एक सुस्थापित डीज़ल वितरण विभाग, मत्स्यन उपस्कर, राशन दूकान, विपणन स्रोत, बर्फ़ फाक्टरी और परिवहन सुविधाएं उपलब्ध हैं।

डोल जाल केवल महाराष्ट्र और गुजरात में उपयोगित संभार है। महाराष्ट्र में इनको समुद्र तल में स्थापित खम्भों में लंगर किया जाता है जिनका प्रचालन साधारणतया अगस्त से मई तक की अवधि में किया जाता है। अर्नाला से लगभग 375 डोल जालों का प्रचालन किया जाता है और प्रचालन की गहराई 18-22 मी तक सीमित देखी जाती है।

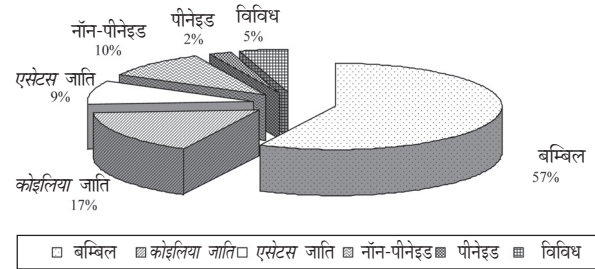
कुल पकड में 60% को धूप में सुखाता है और शेष को ताज़ी अवस्था में उपयोग किया जाता है। सुखायी गयी मछलियों के विपणन तीन तरीके से होता है जैसे व्यापारी (70%), सुखायी गयी मछली बाज़ार (25%), और खुदरा बाज़ार (5%)। अर्नाला में वर्ष 2002 की सबसे प्रमुख मात्स्यकी बम्बिल थी जिसके साथ कोइलिया डसुमिरी, नॉन-पीनेइड ड्रींगे और एसेटस जातियाँ भी उपस्थित थी (चित्र - 1)।

हाल के डोल जाल पकडों में भारतीय तारली सारडिनेल्ला लॉगिसेप्स भारी मात्रा में प्राप्त होने लगी है। वर्ष 2006 का जाति मिश्रण तारली प्रतिशत में हुई वृद्धि को छोड़कर प्रायः

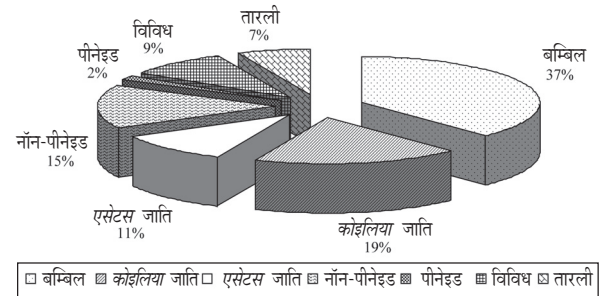
### रिपोर्टर

जे.डी. सारंग और सुजित सुन्दरम

सी एम एफ आर आइ मुंबई अनुसंधान केंद्र, मुंबई



चित्र. 1. अर्नाला में वर्ष 2002 की डोलजाल पकड का जाति मिश्रण



चित्र. 2. अर्नाला में वर्ष 2006 की डोलजाल पकड का जाति मिश्रण

समान था (चित्र - 2)। 2007 जनवरी और फरवरी में डोल जाल प्रचालकों द्वारा तारली का असामान्य अवतरण देखा गया।

19-1-07 को प्रति नाव 270 कि ग्रा की प्रति एकक प्रयास पकड के साथ 18,360 कि ग्रा तारली का अवतरण किया गया। उस दिन कुल 68 एककों का प्रचालन किया गया था। डोल जाल 50 मी की लंबाई और 25 मि मी जालाक्षि के कॉड एन्ड का था। 14 मि मी लंबाई की नाव का प्रचालन 20 मी लंबाई में उत्तर-पश्चिम दिशा में किया गया था। लंबाई आवृत्ति के लिए कुल 104 मछलियों का मापन लिया गया था। तारलियों की लंबाई 160-169 मि मी के माध्य के साथ 77



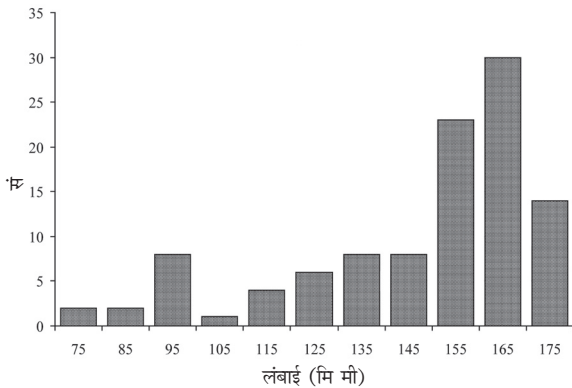


चित्र. 3. अर्नाला में डोलजालों द्वारा अवतरण की गयी तारली

और 178 मि मी के बीच देखी गयी (चित्र - 3)। इन में अधिकतर बड़े सिर और पतला शरीर के थे (प्लेट 1)।

न्यू फेरी वार्फ और सासून डोक्स जैसे मुंबई के प्रमुख अवतरण केंद्रों में आनायकों में भी तारली की पकड बढ़ गयी थी। फिर भी तुलनात्मक अध्ययन के लिए डोल जाल पकडों का उपयोग किया गया था।

पकड में प्रचुरता सितंबर और दिसंबर के बीच देखी गयी। डोल जालों द्वारा तारलियों की वार्षिक पकड न्यू फेरी वार्फ में 6.067 कि ग्रा (2005) से 31,972 कि ग्रा (2006) में और सासून डोक्स में 35,446 कि ग्रा (2005) से 69,799 कि ग्रा (2006) में बढ़ गयी थी। अर्नाला में भी यही प्रवणता काफी उच्च पकड के साथ देखी गयी। वर्ष 2005 के 2,150 कि ग्रा



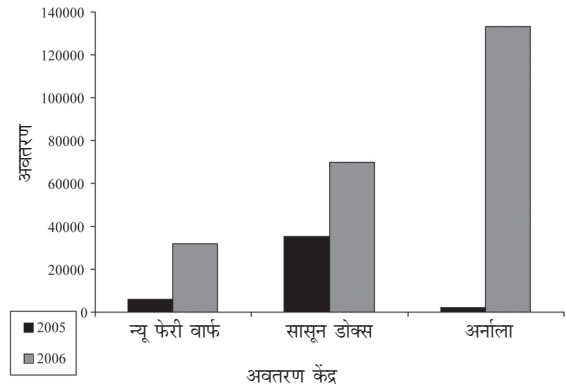
चित्र. 3. अर्नाला में अवतरण की गयी एस. लॉगिसेप्स की आवृत्ति बंटन

की पकड वर्ष 2006 में 1,33,180 कि ग्रा में बढ़ गयी।

भारत में कुल मछली अवतरणों में दक्षिण पश्चिम तट की पकड में प्रमुखता के साथ तारली का अंशदान 10-18% है, अतः मछुआरों की आर्थिकी में इसका स्थान महत्वपूर्ण है। केरल और कर्नाटक राज्यों को छोड़कर जहाँ तारली परंपरागत वाणिज्यिक मात्स्यिकी है, अन्य राज्यों में तारली एक प्रमुख संपदा नहीं है। जाल निर्माण के लिए सिन्थेटिक तंतुओं का उपयोग और कोष-संपाशों जैसे मत्स्यन नावों के यंत्रिकरण के कारण तारली सहित प्रमुख वेलापर्वतियों की मत्स्यन रीति में परिवर्तन आ गया। भारतीय जलक्षेत्रों के तटीय क्षेत्रों में तारली बड़े बड़े झुण्डों में उपस्थित जाना जाता है।

इस प्रकार की छिटपुट उच्च अवतरण पोण्डिच्चेरी, चेन्नई, कडलूर, पणप्पन, रामेश्वरम, पाम्बन, श्रीकाकुलम, टूटिकोरिन और सौराष्ट्र सहित उचीला और उल्लाल जैसे पूर्वी और पश्चिम तटों से भी पहले रिपोर्ट की गयी है।

पूरे वर्ष में उपस्थित होने पर भी तारली का मत्स्यन मौसम साधारणतया जून-दिसंबर के दौरान है जब वार्षिक पकड का 90% तक प्राप्त होता है। मई से नवंबर तक विस्तृत अंडजनन अवधि का श्रृंगकाल जून से अगस्त तक की अवधि होती है। तारलियों की पुनरुत्पादन क्षमता 1.20 और 1.23 मि मी के अंडव्यास के साथ 37,000 से 80,000 तक होकर काफी



चित्र. 4. वर्ष 2005 और 2006 में डोल जाल द्वारा एस. लॉगिसेप्स का अवतरण





प्लेट-1. अर्नाला में अवतरण की गयी तारली सारडिनेल्ला लॉगिसेप्स उच्च है। तारलियों का वितरण संपुष्ट पादपप्लवक उत्पादन होने वाले क्षेत्रों में सीमित है, जो इसका प्रमुख खाद्य है।

पिछले कुछ दशकों में तारली मात्स्यिकी ने स्थानिक, मौसमिक और वार्षिक उत्पादन में घट-बढ़ दिखाया है। इसके कई कारणों में से एक डयाटम उत्पादन में होने वाला परिवर्तन हो सकता है। क्रांतिक स्तर के आगे मानसून की शक्ति में वृद्धि अच्छी पकड़ के लिए शुभसूचक है जबकि क्रांतिक स्तर के नीचे के मानसून में पकड़ भी घट जाती है। अतः दक्षिण-पश्चिम

मानसून और इसके परिणाम स्वरूप होने वाली जैविक, सागरीय और मौसम संबंधी स्थितियाँ पकड़ में होने वाले घट-बढ़ का प्रमुख कारण माना जा सकता है। पश्चिम तट में तारली संपदा की शक्यता इस प्रकार के घट-बढ़ के बावजूद भी उच्च है।

महाराष्ट्र के तट में इसके पहले इतनी बड़ी मात्रा में तारली मात्स्यिकी नहीं देखी गयी है और वर्तमान रिपोर्ट इस तट में इसकी उद्गामी मात्स्यिकी पर प्रकाश डालता है। ताज़े मांस के लिए माँग कम होने की दृष्टि में पकड़ का सिंह भाग धूप में सुखाकर एजेन्टों को बेच दिया गया जिन्होंने इस माल को कुकुर्ट खाद्य और उर्वर के निर्माण के लिए कुछ कंपनियों को दे दी।

यह झुण्ड या तो भारत के दक्षिण-पश्चिम तट से या दूर तट से आनेवाला हो सकता है। पश्चिम तट की हवा द्वारा ऊपरीतल प्रवाह, समुद्र जल तापमान और लवणता तारली प्रवास को प्रभावित घटक हैं। इसका विस्तृत उतार-चढ़ाव और मत्स्यन प्रयास में होने वाली तीव्रता की दृष्टि में संपदा की सुरक्षा और मात्स्यिकी के उचित प्रबन्धन पर ध्यान देना अनिवार्य है।



### सावधान !



शिशु मछलियों की पकड़ से देश को भारी नष्ट होता है। उच्च मूल्यवाली शिशु सुरमई मछलियों की पकड़ का एक दृश्य

